جلسۂ تقسیم انعامات

تقریر

بیگم حامدہ حبیب اللہ

(صدر اتر پردیش اُردو اکادمی)

۲۵؍اپریل ۱۹۸۷

محترم مہمان خصوصی، انعام یافتگان حضرات اور معزز حاضرین!

میں آپ سب حضرات کی نہایت ممنون ہوں کہ اس شدید موسم میں آپ نے اکادمی کی دعوت پر یہاں تشریف لانے کی زحمت فرمائی۔ میں محترم مہمانِ خصوصی کی خاص طور پر شکر گزار ہوں جنھوں نے اپنی بے حساب مصروفیتوں کے باوجود جلسۂ تقسیم انعامات میں شرکت کے لیے وقت نکالا۔

حضرات!

آپ واقف ہوں گے کہ ہماری سابق وزیر اعظم آں جہانی محترمہ اندرا گاندھی نے

اپنی شاندار قیادت کے دوران اردو زبان وادب کے تئیں اپنی محبت کے جو نقوش چھوڑے ہیں، ان میں ایک اُتّر پردیش اردو اکادمی بھی ہے۔ ۱۹۷۲ء میں جب اُتّر پردیش کے وزیر اعلا شری کملاپتی ترپاٹھی تھے، اندرا جی کے ایما پر ہی اس اکادمی کا قیام عمل میں آیا تھا۔ قیادت کا وہی سلسلہ اب ہمارے جواں سال اور باحوصلہ وزیرِ اعظم جناب راجیو گاندھی تک پہنچ گیا ہے اور اُردو کو بجا طور پر اُن سے بھی بہت سی توقعات ہیں۔

مَیں یقین کے ساتھ کہہ سکتی ہوں کہ اردو زبان وادب کی ہمہ جہت ترقی کا جو خاکہ اندرا جی کے ذہن میں تھا، اُتّر پردیش اردو اکادمی اس پر پوری اُتری ہے۔ اِس کا ایک ثبوت یہ بھی ہے کہ بعد میں، ملک کی دوسری ریاستوں میں، قائم ہونے والی اردو اکادمیوں نے ہمارے دستُورُ العمل، ہماری مختلف اسکیموں اور ان کے لیے طے شدہ اصول وضوابط کی روشنی میں اپنے لیے راہِ عمل کا تعیُّن کیا۔

حضرات!

آپ کو یاد ہوگا کہ پچھلے برس، جلسۂ تقسیمِ انعامات کے موقع پر میں نے اپنی تقریر میں ریاست کے وزیر اعلا عالی جناب ویر بہادر سنگھ کی توجہ اکادمی کے دفتر کی موجودہ عمارت کی خستہ حالی کی طرف مبذول کرائی تھی۔ آج مجھے یہ کہتے ہوئے انتہائی مسرّت ہو رہی ہے کہ اُنھوں نے ہماری درخواست قبول کرتے ہوئے ۲۱ لاکھ روپیہ عنایت کیا جس سے گومتی نگر میں ایک بڑا پلاٹ خریدا بھی جا چکا ہے۔ اب عمارت کی تعمیر کے لیے مزید رقم کی ضرورت ہے۔ مجھے پوری امید ہے کہ ایک معقول رقم کا جلد ہی بندوبست کرا کے وزیر اعلا اپنی کشادہ دلی اور اردو دوستی کا مزید ثبوت فراہم کریں گے۔

حضرات!

اُتّر پردیش اُردو اکادمی اُردو زبان، اس کے ادب اور تعلیم کے فروغ

کے لیے جو گوناگوں اقدامات کر رہی ہے ان میں سے کئی کا تعلق براہِ راست مصنف اور اس کی تخلیقات سے ہے۔ مثال کے طور پر اکادمی خود بھی کتابیں شائع کر رہی ہے اور آج اسے اردو ناشرین میں ممتاز مقام حاصل ہے۔ مصنفین کو اپنے مسودات خود شائع کرانے کے لیے امداد دیتی ہے اور پورے ملک میں شائع شدہ اردو کتابوں پر انعامات بھی تقسیم کرتی ہے وغیرہ۔

حضرات!

زندگی اور سماج کی تہذیب و ترتیب اور نئے نئے چراغوں کی روشنی عوام تک پہنچانے کا موثر ترین ذریعہ کتاب رہی ہے۔ پریس کی ایجاد سے پہلے کتابیں بہت کم تعداد میں، صرف مخطوطوں کی شکل میں دستیاب ہوتی تھیں اور ان سے فائدہ اُٹھانے کے موقعے بھی نہایت محدود تھے۔ پریس کی ایجاد کے بعد اِفادے کی راہیں بہت وسیع ہوگئیں اور آج دُنیا کی ہر مہذّب زبان میں طباعت کا اہتمام ہے۔ آج خیالات، تحقیقات اور تجربات کے سفر کی رفتار کتابوں کی بدولت بہت تیز ہے۔

لیکن ـــــ کتاب از خود تو وُجود میں آ نہیں جاتی۔ یا یوں کہیے کہ کتاب جسم ہے اور اس کا جوہر یا اس کی روح اُس کا خالق۔ جو بقولِ میر تقی میرؔ 'خوش سلیقگی سے جگر خون' کر کے اُسے عَدم سے وجود میں لاتا ہے۔ ادیب کے تخلیقی عمل کا احسان ہر اُس فرد پر ہوتا ہے جو براہِ راست یا بالواسطہ اُس سے مستفید ہوتا ہے۔ ادبی کاوشوں کی تحسین اور ادیب کی صلاحیتوں کے اعتراف کے طور پر انعامات بھی پیش کیے جاتے ہیں۔ نوبیل انعام ہو یا گیان پیٹھ انعام، ساہتیہ اکادمی انعام ہو یا اردو اکادمی کے انعامات، سب کے پیچھے یہی جذبہ کارفرما رہتا ہے۔

حضرات!

انعام کی اہمیت مصنفین کو پیش کی جانے والی رقم پر نہیں بلکہ اُس اعترافِ کمال کے جذبے پر منحصر ہوتی ہے جس کا ذکر ابھی کیا جا چکا ہے۔ اس لیے ـــــ میں سمجھتی

ہوں کہ آج جو سندیں آپ کی خدمت میں پیش کی جا رہی ہیں اُن کی قیمت اُن سے منسلک چیکوں کی بہ نسبت کہیں زیادہ ہے۔

انعامات کا یہ سلسلہ اکادمی کے قیام سے ہی جاری ہے اور اب تک ڈیڑھ ہزار سے زیادہ کتابوں پر انعام دیے جا چکے ہیں۔

حضرات!

اِس سال جن کتابوں کو اکادمی کے انعامات کا مستحق قرار دیا گیا ہے ان کی تفصیل اُس کتابچے میں درج ہے جو آپ کی خدمت میں پیش کیا گیا۔ مجموعی ادبی خدمات پر دو خصوصی انعام مصنف، استاد اور اردو کے بے لوث خادم ڈاکٹر شجاعت علی سندیلوی صاحب اور بزرگ و ممتاز شاعر اور ادیب جناب وامق جون پوری کی خدمت میں پیش کیے گئے ہیں۔ اس سلسلے میں میرے لیے اتنا ہی کہنا کافی ہے کہ "حق بہ حقدار رسید"۔

جی تو چاہتا تھا کہ انعام پانے والے آپ تمام حضرات کی خدمت میں فرداً فرداً مبارک باد پیش کرتی لیکن وقت کی تنگی راہ میں حائل ہے۔ بہرحال ـــ میں اپنی طرف سے، اکادمی کی طرف سے اور پوری ریاست اتر پردیش کے محبانِ اردو کی طرف سے آپ سب کو تہِ دل سے مبارک باد پیش کرتی ہوں۔ شکریہ

اتر پردیش اردو اکادمی

لکھنؤ ۲۵ر اپریل ۱۹۸۷

حامدہ حبیب اللہ

صدر

मैं अपनी तरफ़ से, अकादमी की तरफ से और पूरे उत्तर प्रदेश के मुहिब्बाने उर्दू की तरफ से आप सबको तहे दिल से मुबारकबाद पेश करती हूं–

शुक्रिया

हामिदा हबीबुल्लाह
सदर

उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी
लखनऊ : २५ अप्रैल १६८७

क्लासिक प्रिन्टर्स निकट कैसरबाग़ कोतवाली से छपवाकर उ० प्र० उर्दू अकादमी के कार्यालय कैसर बाग़ लखनऊ से प्रकाशित।

मुस्तफ़ीदहोता है। अदबी काविशों की तहसीन ओर अदीब की सलाहियतों के एतराफ़ के तौर पर इनामात भी पेश किए जाते हैं। नोबेल इनाम हों या ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी इनाम हो या उर्दू अकादमी के इनामात-सब के पीछे यही जज़्बा कारफ़र्मा रहता है।

हज़रात

इनाम की अहमियत मुसन्निफ़ीन को पेश की जाने वाली रकम पर नहीं बल्कि उस एतराफे कमाल के जज़्बे पर मुनहसिर होती है जिसका जिक्र अभी किया जा चुका है। इसलिए मैं समझती हूं कि आज जो सनदें आपकी ख़िदमत में पेश की जा रही हैं। उनकी क़ीमत उनसे मुन्सलिक चेकों की बनिस्बत कहीं ज़्यादा है।

इनामात का यह सिलसिला अकादमी के क़याम से ही जारी है और अब तक डेढ़ हजार से ज्यादा किताबों पर इनामात दिये जा चुके है।

हज़रात

इस साल जिन किताबों को अकादमी के इनामात का मुस्तहिक़ क़रार दिया गया है उनकी तफ़सील उस किताबचे में दर्ज है जो आपकी ख़िदमत में पेश किया गया। मजमुई अदबी ख़िदमात पर दो ख़ुसूसी इनाम मशहूर मुसन्निफ़ उस्ताद और उर्दू के बेलौस ख़ादिम डाक्टर शुजाअत अली सन्दीलवी साहब और बुज़ुर्ग और मुमताज़ शायर व अदीब जनाब वामिक़ जौनपुरी की ख़िदमत में पेश किये गये हैं। इस सिल-सिले में मेरे लिए इतना ही कहना काफ़ी है कि "हक व हकादर रसीद"।

जी तो चाहता है कि इनाम पाने वाले आप तमाम हज़रात की खिदमत में फ़र्दन-फ़र्दन मुबारकबाद पेश करती लेकिन वक्त की तंगी राह में हायल है। बहरहाल,

करते हुए २१ लाख रुपया इनायत किया जिससे गोमती नगर में एक बड़ा प्लाट खरीदा भी जा चुका है। अब इमारत की तामीर के लिए मजीद रकम की ज़रूरत है। मुझे पूरी उम्मीद है कि एक माक़ूल रक़म का जल्द ही बन्दोबस्त कराके वज़ीरे आला अपनी कुशादा दिली और उर्दू दोस्ती का मज़ीद सुबूत फ़राहम करेंगे।

हज़रात

उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी, उर्दू ज़बान, उसके अदब और तालीम के फरोग के लिये जो गूनांगूं इक़दामात कर रही है उनमें कई का ताल्लुक़ बराहे रास्त मुसन्निफ़ और उसकी तख़्लीक़ात से है। मिसाल के तौर पर अकादमी ख़ुद भी किताबें शाया कर रही है और आज उसे उर्दू नाशिरीन में मुमताज़ और मक़ाम हासिल है। मुसन्निफ़ीन को अपने मुसव्वदात ख़ुद शाया कराने के लिए इमदाद देती है और पूरे मुल्क में शाया शुदा उर्दू किताबों पर इनामात भी तक़सीम करती है।

हज़रात

ज़िन्दगी और समाज की तहज़ीब व तरतीब और नये नये चराग़ों की रोशनी अवाम तक पहुंचाने का मुअस्सिर तरीन ज़रिया किताब रही है। प्रेस की ईजाद से पहले किताबें बहुत कम तादाद में, सिर्फ़ मख़तूतों की शक्ल में दस्तयाब होती थीं और उनसे फायदा उठाने के मौक़े भी निहायत महदूद थे। प्रेस की ईजाद के बाद इफ़ादे की राहें बहुत वसी हो गयीं और आज दुनिया की हर मुहज़्ज़ब ज़बान में तबाअत का एहतिमाम है। आज ख्यालात, तहक़ीक़ात और तजरिबात के सफ़र की रफ़्तार किताबों की बदौलत बहुत तेज़ है।

लेकिन–किताब अज़ख़ुद तो वजूद में आ नहीं जाती या यूं कहिए कि किताब जिसमें है और उसका जौहर या उसकी रूह, उसका ख़ालिक़ जो बक़ौले मीर तक़ी मीर "ख़ुश सलीक़गी से जिगर ख़ून" करके उसे अदम से वजूद में लाता है। अदीब के तख़्लीक़ी अमल का एहसास हर उस फ़र्द पर होता है जो बराहे रास्त या बिलवास्ता उससे

मोहतरम मेहमाने खुसूसी, इनाम याफ़्तगान हजरात और मुअज़्ज़ज़ हाजिरीन

मैं आप सब हज़रात की निहायत ममनून हूं कि इस शदीद मौसम में आपने अकादमी की दावत पर यहां तशरीफ़ लाने की ज़हमत फ़रमाई। मैं मुहतरम मेहमाने खुसूसी की खास तौर पर शुक्रगुजार हूं जिन्होंने अपनी बेहिसाब मसरूफ़ियतों के बावजूद 'जलसए तक़सीमे इनामात' में शिर्कत के लिए वक्त निकाला।

हज़रात

आप वाक़िफ होंगे कि हमारी साबिक वज़ीरे आज़म आंजहानी मोहतरमा इंदिरा गांधी ने अपनी शानदार क़यादत के दौरान उर्दू जबान व अदब के तईं अपनी मुहब्बत के जो नुकूश छोड़े हैं, उनमें एक उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी भी है। १९७२ ई० में, जब उत्तर प्रदेश के वजीरे आला श्री कमलापति त्रिपाठी थे, इन्द्रा जी के ईमा पर ही इस अकादमी का क़याम अमल में आया था क़यादत का वही सिलसिला अब हमारे जवां साल और बाहौसला वज़ीरे आज़म जनाब राजीव गांधी तक पहुंच गया है और उर्दू को बजा तौर पर उनसे भी बहुत सी तवक्कोआत है।

मैं यकीन के साथ कह सकती हूं कि उर्दू जबान व अदब की हमाजेहत तरक्की का जो खाका इन्द्रा जी के ज़ेहन में था, उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी उस पर पूरी उतरी है। इसका एक सुबूत यह भी है कि बाद में, मुल्क की दूसरी रियासतों में कायम होने वाली उर्दू अकादमियों ने हमारे दस्तूरुल अमल, हमारी मुख्तलिफ़ स्कीमों और उनके लिए तय शुदा उसूल व ज़वाबित की रोशनी में अपने लिए राहे अमल का तअय्युन किया।

हज़रात

आपको याद होगा कि पिछले बरस, 'जल्सए तक़सीमे इनामात' के मौके पर मैंने अपनी तक़रीर में रियासत के वजीरे आला आली जनाब वीर बहादुर सिंह की तवज्जह अकादमी के दफ्तर की मौजूदा इमारत की खस्ताहाली की तरफ़ मब्जूल करायी थी। आज मुझे यह कहते हुए इन्तिहाई मसर्रत हो रही है कि उन्होंने हमारी दरखास्त क़बूल

पुरस्कार वितरण समारोह

भाषण

बेगम हामिदा हबीबुल्लाह

अध्यक्ष उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी

25 अप्रैल 1987